Central Council for Research in Ayurveda & Siddha :www.ccras.org

•

Central Council for Research in Homoeopathy : wwwccrhindia.org

•

Central Council for Unani Medicine : www.unanimedicine.com

•

Centra Council for Research in Yoga & Naturopathy :www.ccryn.org

•

Pharmacopoeia Laboratory : www.plimism.org

•

Homeopathic Pharmacopoeia Laboratory : www.hplism.org

Department of Ayush
Ministry of Health & Family Welfare, Government of India
Red Cross Building, Red Cross Road, New Delhi-110001
Visit us at: www.indianmedicine.nic.in

Designed & Printed by: delhi@spancom.in

Department of Ayush
Ministry of Health & Family Welfare, Government of India

Myths & Interesting Facts

About Ayurveda, Yoga, Naturopathy, Unani, Siddha & Homoeopathy System

Myth: AYUSH Systems are not rational.

Fact: AYUSH Systems are based on time tested codified principles and concepts. Their long standing use and scientific studies prove their safety and efficacy.

Myth: There is no standardization in ASU&H medicines.

Fact: ASU&H medicines are regulated through Drugs & Cosmetics Act, 1940, under which Pharmacopoeial Standards and Good Manufacturing Practices are mandatory requirements to comply with.

Myths: ASU medicines use heavy metals.

Facts: ASU medicines do use heavy metals but after specific detoxification and purification methods and processing with medicinal herbs as per Pharmacopoeial Standards.

Myth: AYUSH therapies have only placebo effect and can only be used as Complimentary and alternative medicines.

Fact: AYUSH therapies have a Holistic approach. These are administered in accordance with disease conditions and total health status of the individuals. It not only involves treatment with medicine but an advice on diet and lifestyle as well. Scientific studies have established their therapeutic benefits.

Myth: Homoeopathy is slow acting

Fact: It is unfortunately a false impression that Homoeopathy is slow acting. The reason may be that despite tremendous potential of it in curing common acute ailments, Homoeopaths are approached only for treatment of uncommon, chronic ailments.

Myth: Homoeopathy first aggravates the disease and then improves it.

Fact: It does not happen to all cases and always, if the chosen remedy matches the patient's need.

More Interesting AYUSH Facts

- The Principles and fundamentals of Ayurvedic, Unani, Yoga & Siddha systems of medicine were laid down well before the evolution of modern medicine.
- The word "Siddha" means an "object to be attained", "perfection" or "heavenly bliss".
- There are over 7,54,985 practitioners of AYUSH in India.
- Ayurveda finds mention in ancient compendia of Indian wisdom & knowledge like Vedas and some Ayurvedic remedies find mention in Ramayana.
- Unani medicine originated in Greece. The knowledge of Unani Tibb came to India from Persia & later got enriched in India.
- Practitioners of Unani medicine were patronized by Mughal Empire.
- Maharaja Ranjit Singh was one of the first persons in India to be treated for an ailment through Homoeopathy.
- "Yog" or "Yoga" is State of Body, Mind and Soul in unison.
- AYUSH systems adopt a holistic approach to healing, covering physical, psychological, social & spiritual aspects of the individual.
- Even modern medicine has today started accepting the relevance of individualized medicine for different people as propounded by most traditional systems, based on the Principles of Prakrti and explained in the modern parlance with genomics.

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद : www.ccras.org

•

केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद : www.ccrhindia.org

•

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा परिषद : www.unanimedicine.com

•

केंद्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद : www.ccryn.org

•

भारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता प्रयोगशाला : www.plimism.org

•

होम्योपैथिक भेषजसंहिता प्रयोगशाला : www.hplism.org

सत्यमेव जयते

आयुष विभाग

स्वास्थ्य एवं परिवार कलयाण मंत्रालय, भारत सरकार
रेड क्रॉस बिल्डिंग, रेडक्रॉस रोड, नई दिल्ली–110001
Visit us at: www.indianmedicine.nic.in

Designed & Printed by: delhi@spancom.in

सत्यमेव जयते

आयुष विभाग

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

व्याप्त भ्रांतियां एवं रोचक यथार्थ

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध
एवं होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियां

व्याप्त भ्रांति: आयुष पद्धतियां तर्क संगत नहीं है।

यथार्थ: आयुष पद्धतियां समय की कसौटी पर परखे गए कूटीकृत सिद्धांतों और अवधारणाओं पर आधारित हैं। ये अपनी सुरक्षा और प्रभावोत्पादकता के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रामाणिक हैं।

व्याप्त भ्रांति: आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों में कोई मानकीकरण नहीं हैं।

यथार्थ: आयुर्वेदिक, सिद्ध, युनानी और होम्योपैथिक औषधियों को औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के द्वारा अधिनियमित किया जाता है जिसके तहत मानक प्रचालन प्रक्रियाओं और अच्छी विनिर्माण पद्धतियों सहित भेषजसंहितागत मानकों का अनुपालन करना अधिदेशात्मक है।

व्याप्त भ्रांति: आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी औषधियों में विषैली भारी धातुओं का प्रयोग किया जाता है।

यथार्थ: आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी औषधियों में भारी धातुओं का प्रयोग उनमें से विशिष्ट विषैले अंशों को निकालने, उनका शुद्धीकरण करने तथा उन्हें औषधीय जड़ी–बूटियों से संसाधित किए जाने के बाद किया जाता है।

व्याप्त भ्रांति: आयुष उपचार का केवल सामयिक असर पड़ता है और इसे केवल प्रतिपूरक एवं वैकल्पिक औषधि के रूप में ही प्रयोग किया जा सकता है।

यथार्थ: आयुष चिकित्सा पद्धतियों में व्याधियों की समग्र चिकित्सा व्यवस्था विद्यमान है। औषधियों को संबद्ध व्यक्तियों की रोग अवस्था और समग्र स्वास्थ्य स्थिति के अनुरूप दिया जाता है। वैज्ञानिक अध्ययन से इनकी उपचारिक क्रियाएं सिद्ध हो गई हैं।

व्याप्त भ्रांति: होम्योपैथी धीरे–धीरे असर करती है।

यथार्थ: यह एक दुर्भाग्यपूर्ण मिथ्या अवधारणा है कि होम्योपैथी धीरे–धीरे असर करती है। इसका कारण यह हो सकता है कि सामान्य तीव्र उपचार में इसमें जबरदस्त क्षमता विद्यमान होने के बावजूद होम्योपैथी चिकित्सकों से तभी संपर्क किया जाता है जब कि किसी गैर साधारण और जीर्ण रोग का उपचार कराना होता है।

व्याप्त भ्रांति: होम्योपैथी में पहले रोग को गंभीर बनाया जाता है और फिर इसमें सुधार लाया जाता है।

यथार्थ: यदि चयनित औषधि रोगी की आवश्यकता के अनुरूप है तो ऐसा सभी मामलों में और हमेशा नहीं होता है।

आयुष से संबंधित और अधिक रोचक यथार्थ

- आयुर्वेद, यूनानी, योग सिद्ध चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतों और आधारभूत तथ्यों को आधुनिक चिकित्सा के विकास क्रम से बहुत पहले निर्धारित किया गया था।
- सिद्ध शब्द से अभिप्रेत "लक्ष्य को प्राप्त करना", "पूर्णता" अथवा "दैवीय स्पंदन है"।
- भारत में आयुष के 7,54,985 से भी अधिक चिकित्साभ्यासी हैं।
- आयुर्वेद का उल्लेख वेद जैसे बुद्धि और ज्ञानसम्मत भारतीय प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। कुछ आयुर्वेदिक औषधियों का उल्लेख रामायण में भी किया गया है।
- यूनानी चिकित्सा का उद्भव यूनान में हुआ था। यूनानी तिब्ब का ज्ञान भारत में ईरान से आया था और कालांतर में यह भारत में समृद्ध रूप में परिवर्तित हो गया।
- यूनानी चिकित्साभ्यासियों का संरक्षण मुगल साम्राज्य द्वारा किया गया था।
- महाराजा रणजीत सिंह भारत के पहले व्यक्ति थे जिनके किसी रोग का उपचार होम्योपैथी के द्वारा किया गया था।
- "योग" अथवा "योगा" शरीर, मस्तिष्क, आत्मा के मिलाप को कहते हैं।
- आयुष चिकित्सा पद्धतियों में समग्रह रोगहर विशेषताएं विद्यमान हैं जिनमें व्यक्ति से संबंधित उसके शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और अध्यात्मिक पक्ष समाविष्ट हैं।
- यहां तक की अब आधुनिक चिकित्सा ने भी सर्वाधिक पारंपरिक पद्धतियों में प्रस्तुत विभिन्न लोगों के लिए व्यक्तिगतकृत चिकित्सा की प्रासंगिकता को स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया है।